Read India
An imprint of Pratham Books

राजा नंग-धड़ंगा है!

कमला बक़ाया
ऑड्रे कुमार

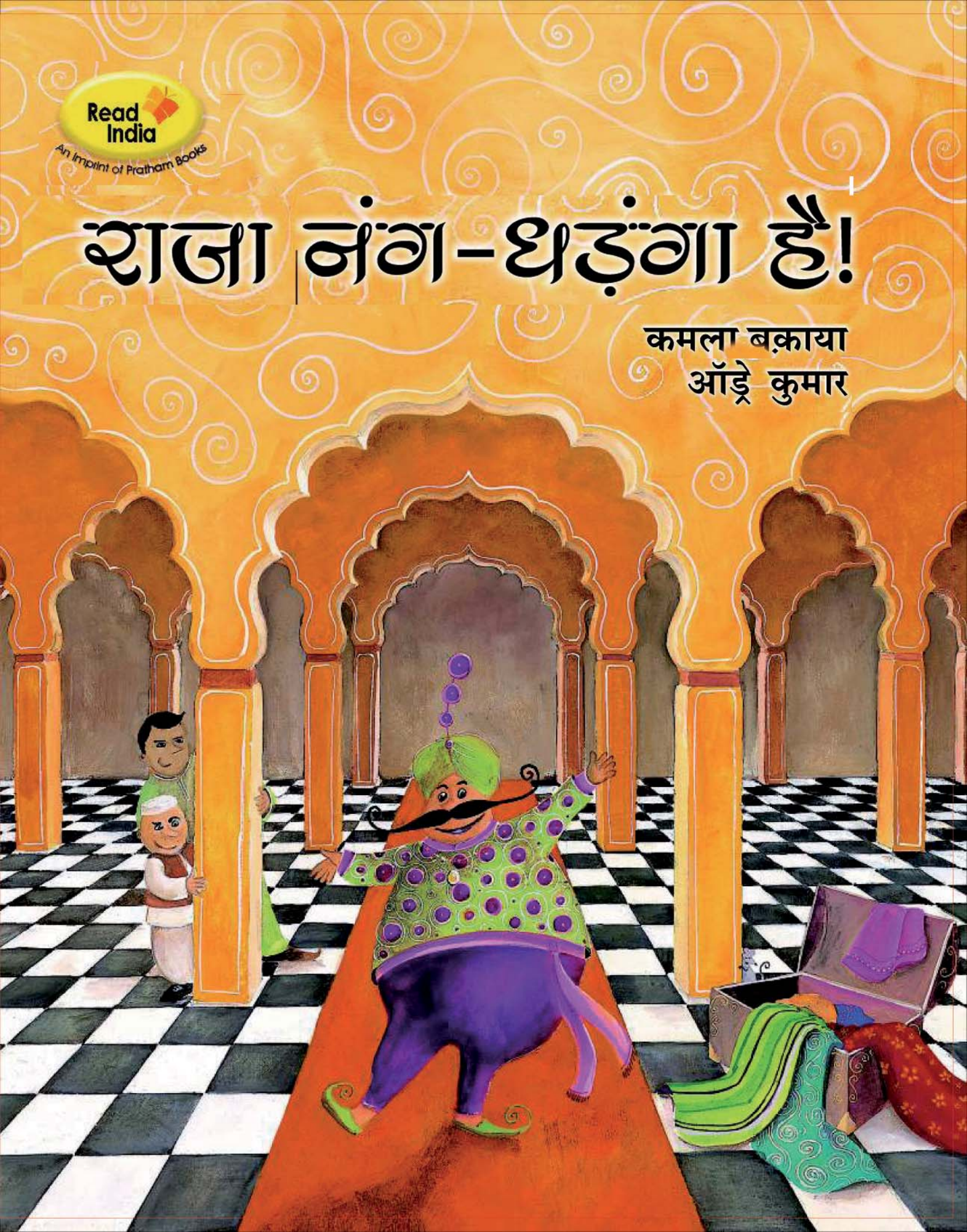

Raja Nang Dhadanga Hai by Kamla Bakaya
© Pratham Books, 2008
First Edition: 2008

Illustrations: Audrey Kumar

ISBN: 978-81-8479-124-2

Registered Office:
PRATHAM BOOKS
633-634, 4th "C" Main, 6th 'B' Cross,
OMBR Layout, Banaswadi,
Bangalore 560 043
✆ 080-25429726 / 27 / 28

Regional Offices:
Mumbai ✆ 022-65162526
New Delhi ✆ 011-65684113

Typesetting by:
Pratham Books, Delhi

Printed by:
Excel Printers Pvt. Ltd., New Delhi

Published by:
Pratham Books
www.prathambooks.org

All rights reserved.
No part of this publication may be reproduced or distributed in any form or
by any means, or stored in a database or retrieval system,
without the prior written permission of the publisher.

राजा नंग-धड़ंगा है!

लेखन
कमला बक़ाया

चित्रांकन
ऑड्रे कुमार

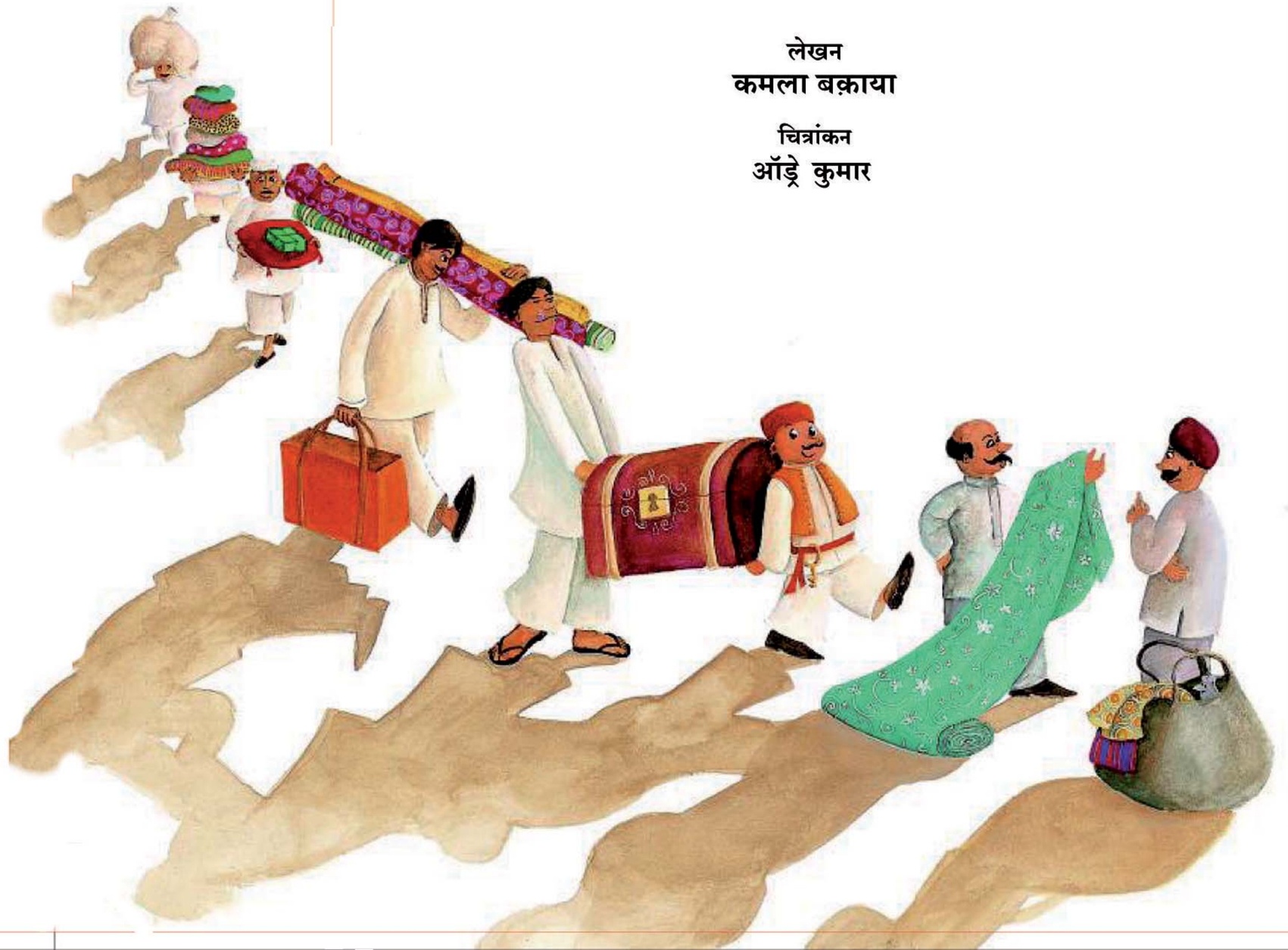

इक राजा था रंगीन बहुत
और कपड़ों का शौक़ीन बहुत।

सौदागर आते बहुतेरे,
दिन-रात लगाते थे फेरे।

थे भरे पड़े रेशम, मख़मल
और बढ़िया ढाके की मलमल।

कपड़ा जो कुछ भी आता था
सब हाथों-हाथ बिकाता था।

पोशाक नई सिलवाता था
औ: फूला नहीं समाता था।

पर फिर भी रूह भटकती थी,
परजा को बात खटकती थी।

यह राजा कुछ दीवाना है,
कपड़ों का कोई ठिकाना है?

कितने अंबार लगाये हैं,
कपड़ा ही दाएँ-बाएँ है।

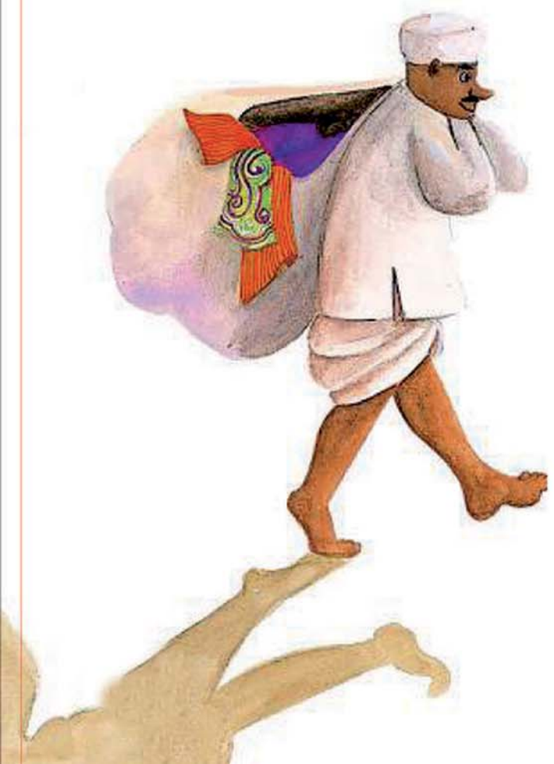

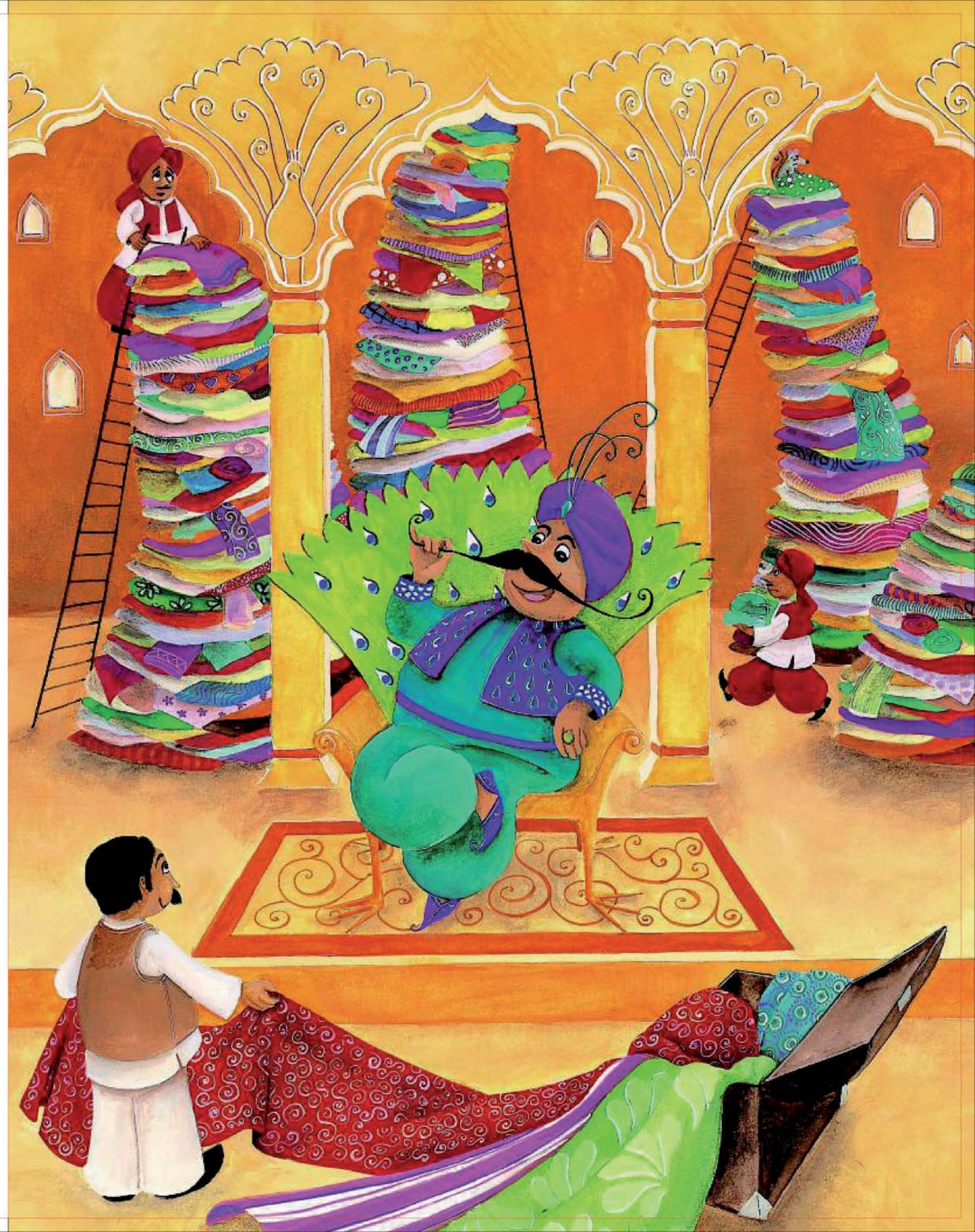

पर राजा को बीमारी थी,
कपड़े की हाजत जारी थी।

दो ग़ुंडों ने मौक़ा पाया,
दरबार में धमके, फ़रमाया:

कपड़ा नायाब बनाते हैं,
जौहर उसमें दिखलाते हैं,

सोने की तारें चुनते हैं,
हम उनसे कपड़ा बुनते हैं।

चांदी की वह गुलकारी हो
कि लट्टू दुनिया सारी हो।

वह रंग अनोखे लाएँगे
कि फूल तलक शर्माएँगे।

इस कपड़े में जो टोना है
सो चाँदी है न सोना है।

बस अक़्ल ही जिसने पाई है
देता उसको दिखलाई है।

राजा को फाँसा चक्कर में,
था जादू उनके मक्कर में।

सोने-चाँदी के ढेर लगे,
वह सेरों के ही सेर लगे।

इक कोठा सारा अपनाया,
सामान उसी में धरवाया।

क्या कहने ख़ातिरदारी के,
थे ठाठ वहाँ सरकारी के।

लेते जाते थे मनमाना,
था मना मगर अंदर आना।

थोड़ा कपड़ा बुन लें भाई,
जिससे कुछ दे तो दिखलाई।

कल शाम तलक कुछ हो जाए,
जिसका मन हो, बेशक आए।

यूँ करते-करते रात हुई,
कल पर ही सारी बात हुई।

फिर कल भी तो आख़िर आया,
वज़ीर राजा ने भिजवाया,

जो लपक के पहुँचा कोठे में,
था अजब तमाशा कोठे में।

बस खड्डी सूनी-सूनी थी,
तिस पर यह हैरत दूनी थी।

जो स्यार थे दोनों रंगे हुए,
ख़ाली खड्डी पर टंगे हुए।

वह मस्त थे कपड़ा बुनने में,
कुछ रंग लगाने, चुनने में।

न चाँदी थी न सोना था,
ख़ाली कमरे का कोना था।

वज़ीर खड़ा भौंचक्का था,
दिल को कुछ पहुँचा धक्का था।

सोचा यह बात बनी कैसी?
यह ताना और तनी कैसी?

कपड़े की दिखती शक्ल नहीं,
क्या सचमुच मुझमें अक़्ल नहीं?

गुंडों ने आँख ज़रा मारी,
शोख़ी थी जिसमें, मक्कारी,

फिर धीरे से यह फ़र्माया:
कपड़ा हुज़ूर के मन भाया?

उंगली के इक इशारे से
वह रंग दिखाते प्यारे-से।

यह देखो नया नमूना है,
मढ़ा यह सोना दूना है।

वज़ीर खड़े थे मुँह बाए,
था सोच - कहा अब क्या जाए?

फिर बोल उठे कि क्या कहने!
सज जाए वो ही जो पहने।

हिकमत तो ख़ूब दिखाई है,
क्या ग़ज़ब की चीज़ बनाई है!

यह गंगा-जमनी तारें हैं,
क्या रंग जमाए प्यारे हैं!

वज़ीर राजा के पास गए,
कुछ लेकर होशहवास नए।

कपड़ा जनाब निराला है,
वह आला से भी आला है।

सोने के फूल बनाए हैं,
जैसे गुच्छे लटकाए हैं।

फिर पहुँचे सब बारी-बारी
पर देख न पाए गुलकारी।

था साफ़ चटा मैदान पड़ा,
हर कोई था हैरान बड़ा।

कुछ कहते बन नहीं आती,
और अक़्ल अलग थी चकराती।

तारीफ़ों के पुल बाँध दिये,
एक-एक को माँद किये।

तब आई बारी राजा की,
रौनक़ थी सारी राजा की।

वह आँखें धर-धर मलता था,
पर बस नहीं कुछ चलता था।

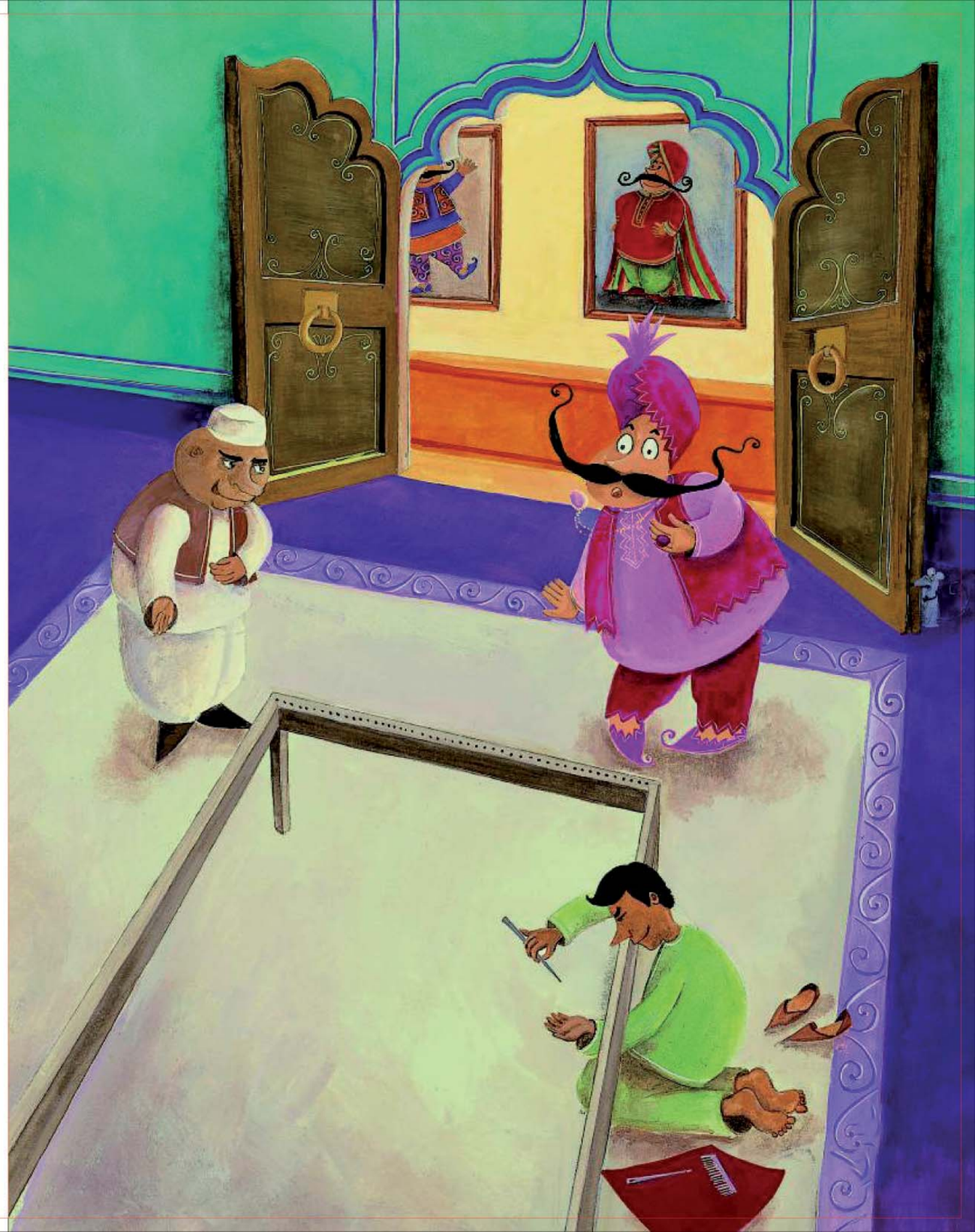

कपड़े का नाम-निशान नहीं,
सोना-चाँदी सामान नहीं।

खड्डी तो बिलकुल ख़ाली थी,
गुंडों ने ख़ूब सम्हाली थी।

बुनते दिखते ताना-बाना,
क्या मैं ही नहीं रहा दाना?

फिर लानत इस राजाई पर,
हाकिम हूँ अक़्ल पराई पर।

जो परजा बुद्धू जानेगी,
क्या रोब हमारा मानेगी?

बस बोल उठा - क्या कहने हैं!
कपड़े तो बेशक पहने हैं

पर इसकी रास नहीं करते,
दिखते सब पानी ही भरते!

कपड़ा बन कर तैयार हुआ,
गुंडों का बेड़ा पार हुआ।

वह बिदा हुए, रुख़्सत माँगी,
दम लेने की फ़ुरसत माँगी।

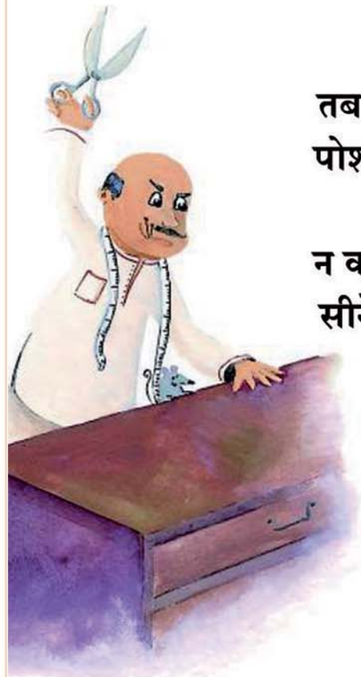

तब आई बारी दर्ज़ी की,
पोशाक बताई मर्ज़ी की।

न कपड़ा था न लत्ता था,
सीने बैठा अलबत्ता था।

वह यूँ ही ब्योंत लगाता था,
फिर कैंची यूँ ही चलाता था।

फिर जामा सिलना शुरू हुआ,
वह दोनों का भी गुरू हुआ।

हवा को सुई चुभोता था,
तागे को यूँ ही पिरोता था।

कपड़े सी-सी कर धरता था,
यह अचकन थी, वह कुरता था।

यूँ ही पोशाक बनी सारी,
मिटी अड़चन वह भी भारी।

राजा की सालगिरह आई,
ये ही पोशाक गई लाई।

यह कुर्ता है, यह पैजामा,
यह ऊपर का लीजे जामा।

था पास खड़ा आईने के,
कपड़े थे अजब क़रीने के।

मन में चकराया जाता था,
सुकड़ा शर्माया जाता था।

ख़ुद दरबारी भौंचक्के थे,
कहते वाह-वाह उचक्के थे।

अब शहर सवारी जाएगी,
परजा सब वारी जाएगी।

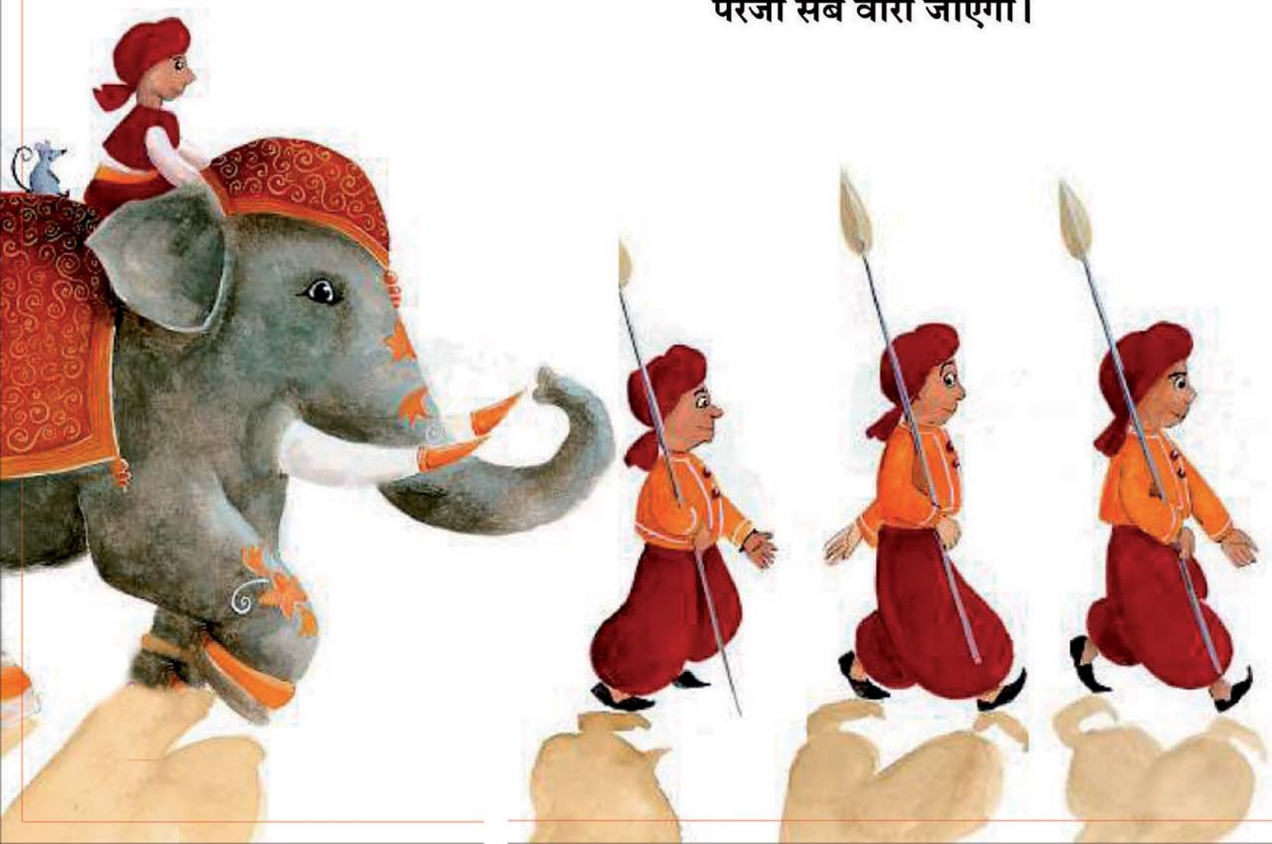

थे अक़्ल के राजा बेढंगे,
चल निकले नंगे के नंगे।

बोले हम पैदल जाएँगे,
कपड़े सबको दिखलाएँगे।

कुछ टोह मिले दानाई की,
किस किसने खरी कमाई की।

जिसमें पाऊँगा अक़्ल नहीं,
फिर से देखूँगा शक्ल नहीं।

फिर साथ लिए सब दरबारी,
सब वर्दी पहने सरकारी,

बीचों बीच में राजा था,
और आगे शाही बाजा था।

यूँ निकला कारवाँ सबका,
नज़ारा ख़ुशनुमा सबका।

लोगों के भीड़-भड़क्के थे,
लगते धक्कों पर धक्के थे,

कोई मुँह को फाड़े देता था,
कोई आँखें गाड़े देता था।

न दिखता कुर्ता-पैजामा,
न ऊपर का ही वह जामा।

सारा ही ढंग कुढंगा था,
राजा तो बिलकुल नंगा था!

पर कहते मुँह से कुछ कैसे,
क्यों कहलाते ऐसे-तैसे?

सब वाह-वाह करते जाते
दम यूँ ही थे भरते जाते।

इक बच्चा आया छोटा-सा,
गोरा-गोरा और मोटा-सा।

राजा उसने देखा ज्यों ही,
ताली पीटी, बोला त्यों ही:

बहती उलटी गंगा है,
अब राजा नंग-धड़ंगा है!

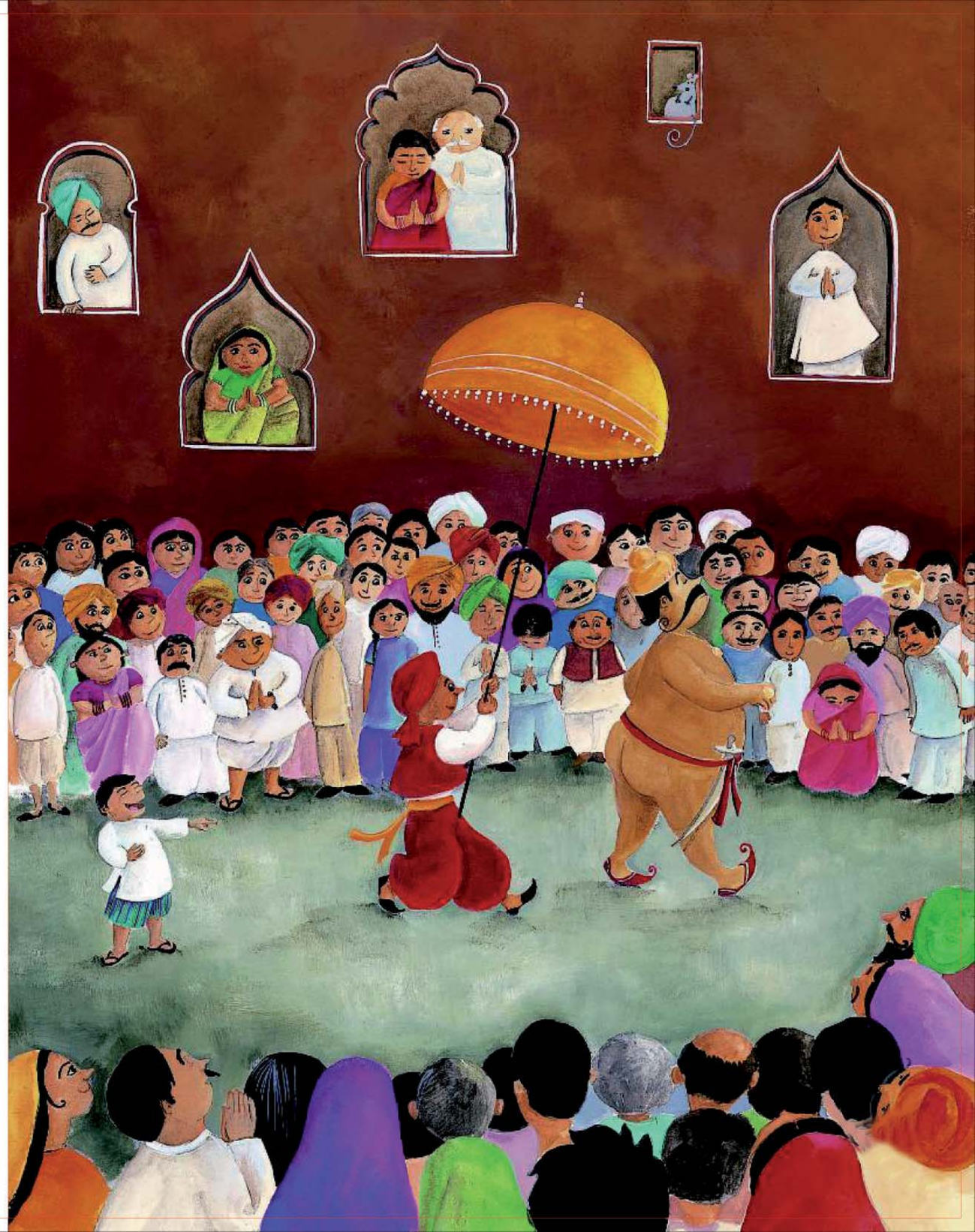

कमला बक़ाया का जन्म सन् १९०० में एक कश्मीरी पा
मोंटेसरी प्रशिक्षण स्वयं मेडम मोंटेसरी से प्राप्त किया। वे
कर लाहौर में मोंटेसरी की पहली कक्षाएँ शुरू कीं। वे बच
अनगिनत गीत व कविताएँ लिखी हैं। सन् १९७३ में उनक
र में, उत्तर प्रदेश में हुआ था। घर में ही पढ़ी-लिखी कम
इ प्रशिक्षण पाने वाले पहले चार भारतियों में से एक थीं। उ
की शिक्षा से जुड़ी रहीं और पूरी उम्र बच्चों के लिए लिख
हान्त हुआ।

कमला बक़ाया का जन्म सन् १९०० में एक कश्मीरी पा
मोंटेसरी प्रशिक्षण स्वयं मेडम मोंटेसरी से प्राप्त किया। वे
कर लाहौर में मोंटेसरी की पहली कक्षाएँ शुरू कीं। वे बच
अनगिनत गीत व कविताएँ लिखी हैं। सन् १९७३ में उनक
र में, उत्तर प्रदेश में हुआ था। घर में ही पढ़ी-लिखी कम
इ प्रशिक्षण पाने वाले पहले चार भारतियों में से एक थीं। उ
की शिक्षा से जुड़ी रहीं और पूरी उम्र बच्चों के लिए लिख
हान्त हुआ।

कमला बक़ाया का जन्म सन् १९०० में एक कश्मीरी पा
मोंटेसरी प्रशिक्षण स्वयं मेडम मोंटेसरी से प्राप्त किया। वे
कर लाहौर में मोंटेसरी की पहली कक्षाएँ शुरू कीं। वे बच
अनगिनत गीत व कविताएँ लिखी हैं। सन् १९७३ में उनक
र में, उत्तर प्रदेश में हुआ था। घर में ही पढ़ी-लिखी कम
इ प्रशिक्षण पाने वाले पहले चार भारतियों में से एक थीं। उ
की शिक्षा से जुड़ी रहीं और पूरी उम्र बच्चों के लिए लिख
हान्त हुआ।

**नंग धड़ंग राजा का मशहूर किस्सा एक नये चुटीले रूप में!
कविता, कहानी और मनभावन चित्रों का यह अनोखा संगम
आपको लोट पोट कर देगा।**

अनेक भारतीय भाषाओं में हमारी रोचक किताबों के बारे में और जानकारी के लिये
www.prathambooks.org पर लॉग आन करें।

हमारी किताबें अंग्रेज़ी, हिंदी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मराठी,
गुजराती, बांग्ला, पंजाबी, उर्दू व उड़िया में भी उपलब्ध हैं।

PRATHAM BOOKS

प्रथम बुक्स भारतीय भाषाओं में वाजिब दामों व अच्छे स्तर की
बाल पुस्तकें प्रकाशित करने वाली ग़ैर मुनाफ़ा प्रकाशन संस्था है।

ISBN 978-81-8479-124-2

Age Group: 11-14 years
Raja Nang Dhadanga Hai (Hindi)
MRP: Rs. 20.00